इब्राहिम गार्दी

वृन्दावनलाल वर्मा

प्रस्तावना

बच्चों, इतिहास की कुछ घटनाएँ हमारे मन में गहरा जख्म बन जाती हैं..... वक्त का मरहम उस दर्द को कम जरुर कर देता है पर उसकी टीस को मिटा नहीं पाता.....

१४ जनवरी १७६१ का दिन भी हमारे लिए कुछ ऐसा ही दर्दनाक दिन था. इस दिन मराठों ने अब्दाली के हाथों करारी शिकस्त खाई थी. कहतें हैं शायद ही किसी लढाई में इतना नर संहार हुआ होगा जितना पानीपत में एक दिन में हुआ था. इस एक दिन मे लढ़वैया सैनिक :१५,०००-२०,०००. नागरिक= ३०,०००-३५,०००. कुल मिलाकर :४५,००० ते ५५,००० लोगों की मौत हुई थी.

आज पुनः एक बार हम उसी युध्द का अनुभव लेने वालें हैं , इस पाठ के जरिए. जिसे लिखा है वृन्दावनलाल वर्मा

सैनिकों को दिखाया गया है|

T२

पाठ की ओर बढने से पहले चलिए हम पानीपत के युद्ध के विषय में थोड़ा जान लेतें हैं.

यह युद्ध हुआ था मराठों तथा अफगानों के बीच में.... सदाशिव भाऊ पेशवे तथा अहमद शाह अब्दाली के बीच में.....

मराठों के बढ़ते कदमों को रोकने के लिए अहमद शाह अब्दाली को अफगान से बुलवाया गया, अब्दाली को साथ मिला अवध के नवाब शुजौदोल्ला का और रोहिला पठान नजीब का.

सदाशिव भाऊ का साथ देने आए होळकर, शिंदे, गायकवाड, बुंदेले तथा सूरजमल जाट और भरतपुर के जाट. और इब्राहिम गार्दी जो मराठों के दसहजार पलटन का सेनापति था.

इन फौजों का आमना सामना पहले कर्नाल तथा कुंजपुरा में हुआ, जहाँ अब्दाली को पीछे हटना पड़ा. पर अब अब्दाली चौंकन्ना हो गया था . उसके सैनिकों ने गोविन्दपन्त बुंदेले के सैनिकों पर हमला किया जो पानीपत में रुके मरोठी सैनिकों को घोडें तथा रसद ले जा रहे थे.

इस प्रकार अब्दाली ने मराठों की रसद ही तोड़ दी. इस युध्द के दौरान मराठा सैनिकों के साथ बड़ी तादाद में काशी यात्रा की तयारी से आए यात्री, स्त्री और अनेक नलड़ने वाले लोगों का काफ़िला. इनका पेट भरते-भरते युध्द करने वाले सैनिक भूखों मरने लगे. भूखों मर रहे मराठों के पास आक्रमण के सिवाय दूसरा कोई चारा नहीं था.

युद्धक्षेत्र में मराठों की सेना उत्तर दिशा में स्थित थी और अब्दाली की सेना दक्षिण की ओर...

अब्दाली की सेना तिरछी थी, मराठों की सेना सीधी थी.मराठा सेना की दाहिनी ओर इब्राहिम खान थे और बाएँ ओर शिंदे- होलकर थे..... सेना के मध्य भाग में सदाशिव भाऊ और विश्वासराव थे. अब्दाली की सेना की रचना भी कुछ ऐसी ही थी. एक ओर नजीब दूसरी ओर फ़ारसी सैनिक तथा मध्य भाग में शुजाउद्दौला.....

T३

पानिपत की तीसरी लढाई: १८ शतक में फैजाबाद शैली द्वारा निकाला गया यह चित्र है.

इसमें दोनों ओर की सेना की वास्तविक व्यूह रचना दिखाई देती है. चोरों ओर तोपों का धुआं दिखाई देता है.लाल रंग के घोड़े पर अब्दाली बैठा दिख रहा है.उसके निचली ओर नजीब की सेना दिखाई देती है. मराठा सेना में जख्मी भाऊ और इतस्ततः फैले मराठों के सैनिक है.बाईंओर यात्रियों के शिबिर में घुस कर अत्याचार करने वाले अब्दाली

T4

युध्द की शुरूवात इब्राहिम गार्दी ने की . उसके सैनिकों ने प्रथम तोपें दागी और फिर रोहिला सैनिकों से भिड गए, इस प्रकार युध्द का आरंभ मराठों के लिए काफी अच्छा सिध्द हुआ. सदाशिव भाऊ की सेना ने भी वीरत दिखाई. युध्द के दूसरे सत्र में शिंदे ने नजीब के विरोध में लढाई शुरू की. इस प्रकार कुछ समय तक रणभूमि पर मराठों का वर्चस्व रहा ..... मराठों को

जीतते देख अब्दाली ने अपने बचे हुए सैनिकों को बाहर निकाला.... इन सैनिकों की संख्या १०००० के लगभग थी... अब धीरे-धीरे युध्द का चेहरा बदलने लगा.

कुंजपुरा के युध्द में मराठों ने जिन अफगान सैनिकों को बंदी बना लिया था उन्होनें विद्रोह करना आरंभ किया, जिससे मराठों को लगा कि शत्रु ने पीछे से आक्रमण कर दिया है.

इसी गलतफहमी के कारण और अफगानों के ताजे-तावाने १०००० सैनिकों के सामने आधे पेट लड़ने वाले थके हुए मराठा सैनिकों की एक न चली और धीरे-धीरे मराठे जीता हुआ युध्द हार बैठे.

T5

इस युध्द का परिणाम बहुत विदारक रहा, मराठे इस हार से कभी उभर नहीं पाए. भाऊसाहेब, विश्वासराव, इब्राहीम खान, यशवंतराव पवार, तुकोजी शिंदे, जनकोजी शिंदे इन वीरों को इस युध्द में वीरगति प्राप्त हुई. इस युध्द ने मराठों की एक संपूर्ण पीढ़ी को ही नष्ट कर दिया. १४ जनवरी १७६१ का दिन हमारे इतिहास का काला दिन माना जाता है. Bchchon yahan

T6

पानिपत के उस भयानक नर-संहार के बाद घायल इब्राहिम खान को शुजाउद्दौला के खेमे में बंदी बनाकर लाया जाता है. जैसी ही अब्दाली को इस बात की खबर मिलती है वह इब्राहिम को उसके सामने पेश होने का आदेश देता है.

अहमद शाह ने उसे बार –बार मुसलमान धर्म की दुहाई दी.उसे काफ़िर अर्थात अधर्मी भी कहा.

अहमद शाह को इस बात पर काफी अचरज था कि इब्राहिम ने फिरंगी जबान पढ़ी है. उसके अनुसार इब्राहिम ने हैदराबाद के निजाम की नौकरी छोडकर मराठों की नौकरी की, यह उससे बड़ा पाप हो गया है, जिसके लिए उसे तौबा करनी चाहिए.

इब्राहिम खान ने इस पर तुनक कर जवाब दिया कि वह जनता है कि वह क्या कर रहा है, तथा उसने ऐसा कुछ भी नहीं किया है कि उसे तौबा करनी चाहिए.

T7

अहमद शाह अब्दाली एक कटटर मुसलमान था, जिसके अनुसार इब्राहिम एक मुसलमान होकर अपनी जिन्दगी बिगाड़ रहा था.

वहीं इब्राहिम खान एक आत्मविश्वास से पूर्ण शूर और धैर्यशील जांबाज़ था. अब्दाली के रूप में सामने खड़ी मौत से भी वह नहीं डरा.

मुसलमान धर्म का वास्तविक अर्थ अब्दाली को बताते हुए उसने कहा, “जो अपने मुल्क से गददारी करे, जो अपने मुल्क को बर्बाद करने वाले परदेसियों का साथ दे, वह मुसलमान नहीं.

दकियानूसी विचारों से भरे बेरहम अब्दाली ने व्यंग्यभरी मुस्कराहट के साथ इब्राहिम से पूछा, “नमाज़ पढ़ते हो? फिरंगी या मराठी जबान में पढ़ते होंगे.” इस पर जो उत्तर इब्राहिम ने दिया इससे उसके दृढ़ स्वभाव का पता चलता है, उसने कहा, “ खुदा सभी ज़बाने समझता है और क्या राम और रहीम अलग-अलग हैं?”

T8

इस पर अब्दाली ने इब्राहिम को धमकाया और कहा, “तौबा करो वरना टुकड़े-टुकड़े कर दिए जाओगे.”

परन्तु इब्राहिम जो उसूलों का पक्का था उसने शांत स्वर में कहा, “तन के टुकड़े हो जाने से रूह अर्थात आत्मा के टुकड़े तो नहीं होंगें.”

धमकाने से भी न डरने वाले इब्राहिम को अब्दाली ने लालच देना चाहा, उसे छोड़ने की तथा फ़ौज में नौकरी देने की बात की.

इस पर इमानदार इब्राहिम ने कहा, “ अगर छूट गया तो पूना जाकर पूनः पलटने जमाकर आक्रमण करूंगा.”

T9

अब्दाली ने इब्राहिम को बुतपरस्त कहा, बदज़बान कहा पर इब्राहिम ने सभी बातों का जवाब नहीं दिया. लेकिन जब इब्राहिम ने सदाशिव भाऊ और विशवास राव की मौत की बात सुनी तो उसके अतीव दुःख हुआ, फिर भी यह जांबाज़ सिपाही शरण आने के लिए तैयार न था.

अब्दाली ने उसके टुकड़े-टुकड़े करने का आदेश दिया. इब्राहिम खान ने औने मुल्क और ईमान के लिए अपने-आप को न्यौछावर कर दिया.

T10

अंत में उसके मुख से यह वाक्य निकला, " हम हिन्दू- मुसलामानों की मिटटी से ऐसे सूरमा पैदा होंगे, जो वहशियों और जालिमों का नामोनिशान मिटा देंगे.

T11

- **इब्राहीम ख़ाँ गार्दी** एक सैनिक था, जिसे ब्रिटिश सेनाधिकारी ब्रसी ने स्वयं प्रशिक्षित किया था।
- अपनी योग्यता के बल पर इब्राहीम ख़ाँ शीघ्र ही ब्रिटिश तोपख़ाने का प्रधान हो गया।
- 1757 ई. में उसने निज़ाम की नौकरी कर ली थी, परन्तु अगले ही साल वह पेशवा की सेवा में महाराष्ट्र चला गया।
- उसने 1760 ई. में उदगिर की लड़ाई में निज़ाम की फ़ौजों के ख़िलाफ़ मराठों को विजय बनाने में भारी योगदान किया था।
- गार्दी पानीपत की तासरी लड़ाई में 9000 सिपाहियों तथा 40 तोपों के साथ मराठों की ओर से लड़ा।

T12

इब्राहिम खान मराठों का सेनापति जिसने इस युध्द में अपने पराक्रम को लोहा मनवाया. उसने ही मराठों को जमीन की युध्द कला बताई. और अंत में अपने ईमान के खातिर हँसते-हँसते अपनी जान दे दी.

इब्राहिम ने व्यक्तिगत धर्म से बढकर राष्ट्र-धर्म को माना, धर्म का वास्तविक अर्थ बताया. जब भी देश खतरे में होता है तब हमें अपने धर्म के बारे में ना सोचते हुए अपने देश को अधिक महत्व देना चाहिए.

अगर वह चाहता तो अब्दाली की नौकरी का स्वीकार कर सकता था, पर उसने मौत को स्वीकारा. इब्राहिम ने नमक-हरामी नहीं की नमक-हलाली की. अपनी आत्मा की आवाज़ सुनी. उसके लिए मानवता का धर्म ही सर्वश्रेष्ठ धर्म था अपने ईमान से इमानदारी रखना सबसे बड़ा धर्म था.

गार्दी जैसे सूरमाओं ने ही हमें जीने का अर्थ बताया है.और राष्ट्र-धर्म का पाठ पढाया है.

T13

मूल्यांकन

१. पानीपत का युध्द कब हुआ था?

अ. १७८०

आ. १७६९

इ. १७६१

ई. १७६२

२. पेशवाओं के यहाँ काम करने से पहले इब्राहिमकिसके यहाँ काम करता था?

अ. हैद्राबाद के निजाम के यहाँ

आ. फ़्रांसीसियों के यहाँ

इ. शुजाउदौला के यहाँ

ई. नजीब के यहाँ

३. अब्दाली ने इब्राहिम को किस बात का लालच दिया?

अ. छोड़ देने का

आ. छोड़ देने का तथा फौज में नौकरी देने का

इ. पैसों का

ई. राज्य का

४. अंत में इब्राहिम के साथ क्या सुलूक किया गया?

अ. उसे छोड़ दिया गया

आ. उसे हाथी के पैरों तले दे दिया गया

इ. उसके टुकड़े-टुकड़े कर दिए गए

ई. उसे तोप से उड़ाया गया

T14

Worksheet

१. उन प्रसंगों का उल्लेख करें जिससे अब्दाली की निम्नलिखित स्वभाव विशेषताओं का पता चलता है:-

अ. दकियानूसी विचार

आ. धर्म का वास्तविक अर्थ पता न था

इ. क्रूरता

ई. गुसैल

उ. बेरहम अर्थात दयाराहित

ऊ. अहंकारी

२. उन प्रसंगों का उल्लेख करें जिससे इब्राहिम की निम्नलिखित स्वभाव विशेषताओं का पता चलता है:-

अ. स्वामिनिष्ठ

आ. धर्मपरायण

इ. धैर्यशील

ई. शूर-वीर

उ. इमानदार

ऊ. आत्मविश्वासपूर्ण

३. इस पूरी घटना का वर्णन अपने शब्दों में करें इस घटना का नाट्यीकरण करें.

T15

परियोजना:-

- आपस में गुट बनाकर कारगिल के युध्द के इतिहास की जानकारी प्राप्त करें तथा छोटी कक्षाओं में बताएँ.

- सीमा पर लड़ रहे सैनिकों के नाम एक प्रशंसा से भरा पत्र लिखें तथा सैनिकों से प्राप्त उत्तर हमें mail करें |